विनोद कुमार शुक्ल

हरी घास की छप्पर वाली झोपड़ी और बौना पहाड़ (5)

वह बोलू के पैर के आसपास की रेत दोनों हाथों से हटाने लगा। यह सब वह शान्त मन से कर रहा था। बोलू टुकर-टुकर उसके रेत हटाने को सिर झुकाए देख रहा था। परन्तु वह कहीं खोया हुआ था। वह गायब होकर वहाँ नहीं था। लेकिन सबको दिखाई दे रहा था। युवक हाँफने लगा था। बोलू को छोड़ वह सिर झुकाए अलग हो गया। किसी की ओर उसने देखा भी नहीं। केवल बोलू की ओर देखा। उसने आँखें झुका लीं। बोलू उसे तब देख रहा था।

फिर युवक ने सब बच्चों को देखा। भैरा युवक को इस खुशी से देख रहा था कि बोलू में युवक से अधिक ताकत है। तभी कूना बस्ती की ओर भागी। उसके पीछे भैरा और सभी भागे। युवक भी भागा। युवक सबसे आगे हो गया था। पता नहीं भैरा में भागने की इतनी ताकत कैसे आ गई थी? वह अपनी टोपी हाथ में लेकर भाग रहा था। जब वह पहली बार बोलू से टकराया था तो टोपी गिर गई थी। दूसरी बार हाथ में टोपी लेकर वह बोलू से टकराया था।

जब सब भाग रहे थे तब बोलू कहीं खोया हुआ नहीं था। बोलू ने उनको भागते देखा। तब "भाग चलो भई भाग चलो..." तेज़ भागने की ताल में गाता हुआ बोलू भागने लगा। "ज़ोर से दौड़ो। खटपट दौड़ो। सरपट भागो।" बीच-बीच में बोलू कहता। बोलू के छोटे-छोटे पैर कभी धरती पर पड़ते, कभी नहीं पड़ते। जब धरती पर नहीं पड़ते, तब उसके कदम हवा में पड़ते। वह छलाँग नहीं लगा रहा था कि उछलकर दूर जाता। एक कदम धरती के बाद चार कदम वह हवा में दौड़ता। जब वह हवा में होता तब दौड़ो-दौड़ो नहीं कहता था। कहने लगता "उड़ो-उड़ो भई उड़ो-उड़ो" "हवा के संग उड़ो-उड़ो।" जब वह हवा में कुछ देर गाता तब उसके साथ उतनी देर चह चह बोलती पतरंगी भी उड़ती। बोलू जब धरती पर दौड़ता तब पतरंगी पेड़ पर बैठ जाती। और बोलू के हवा में उड़ने का रास्ता देखती। उसके हवा में आते ही झँकृत स्वर में चहकती बोलू के साथ उड़ती। पतरंगी बोलू के पास उड़ते समय बोलू के लहराते लम्बे बालों से अपने को बचाती। दौड़ते-उड़ते बोलू अपने साथियों के पास पहुँच गया। "खटपट दौड़ो। सरपट भागो।" बोलू की आवाज़ भैरा ने पहले सुनी जो सबसे पीछे था। उसने मुड़कर देखा और खुशी से चिल्लाया, "बोलू।" दौड़ते हुए सब लोगों ने मुड़कर बोलू को देखा और "बोलू-बोलू" चिल्लाने लगे।

उधर दूर बस्ती से एक भीड़ आते दिखी। कुछ पास आने पर दिखा कि युवक के साथ बोलू की माँ है। हरी घास के छप्पर की झोपड़ी में रहने वाले बूढ़े और बूढ़ी हैं। बजरंग होटल का भजिया बनाने वाला है। बजरंग महराज ने भैरा की चिन्ता में भेजा होगा। पूरी बस्ती होगी केवल बजरंग महराज को छोड़कर। यदि बजरंग महराज होंगे तो उन्हें पहचानता कौन होगा? बोलू की माँ को चिन्ता होगी। युवक से बात करते आ रही थी। युवक ने बोलू की घटना बताई होगी। ये सब बोलू को सामूहिक ताकत से गोद में उठाकर बस्ती लाना चाहते थे। बोलू की माँ को याद आ रहा था। बोलू छोटा-सा था। करवट भी नहीं ले पाता था। जब रोता था तब गोद में उठा लेती थी। ऊँ-ऊँ बोलता था कि गोद में आने को कह रहा है। तब गोद में उठा लेती थी। जब चुपचाप पड़ा रहता या सोता रहता, तब उठा नहीं पाती थी। धरती पर थका हुआ सो जाता। खटिया पर सुलाने उठाती तो उठा नहीं पाती थी। अधिक प्रयास नहीं करती थी। सोचती सोने दो उठाने से नींद न खुल जाए।

बोलू की माँ ने बोलू को देख लिया था, बोलू ने भी देख लिया था। माँ..... बोलने की लम्बी किलकारी थी। चार कदम वह हवा में दौड़ा था। पतरंगी चिड़िया झनकार की चह-चह बोलते बोलू के साथ आ उड़ी थी। वह माँ से लिपट गया था। माँ बोलने की फिर एक लम्बी किलकारी थी। इस लम्बी किलकारी के बीच में ही माँ ने उसे गोद में उठा लिया था। तब वह हल्का हो चुका था। गोद में उसे अच्छा लग रहा था। बोलू ने कहा, "माँ भूख लग रही है।" माँ से वह लड़िया रहा था। "घर चलो।" उसने कहा। बोलू के चुप होने के कुछ पल बीते थे कि बोलू भारी होने लगा। माँ ने बोलू से कहा, "जंगल की हवा का झूला है बोलू गाओ।" बोलू गाने लगाः

जंगल की हवा का झूला है।
उसकी हवा के झोंकों में
जंगल के फूलों की थपकी है।

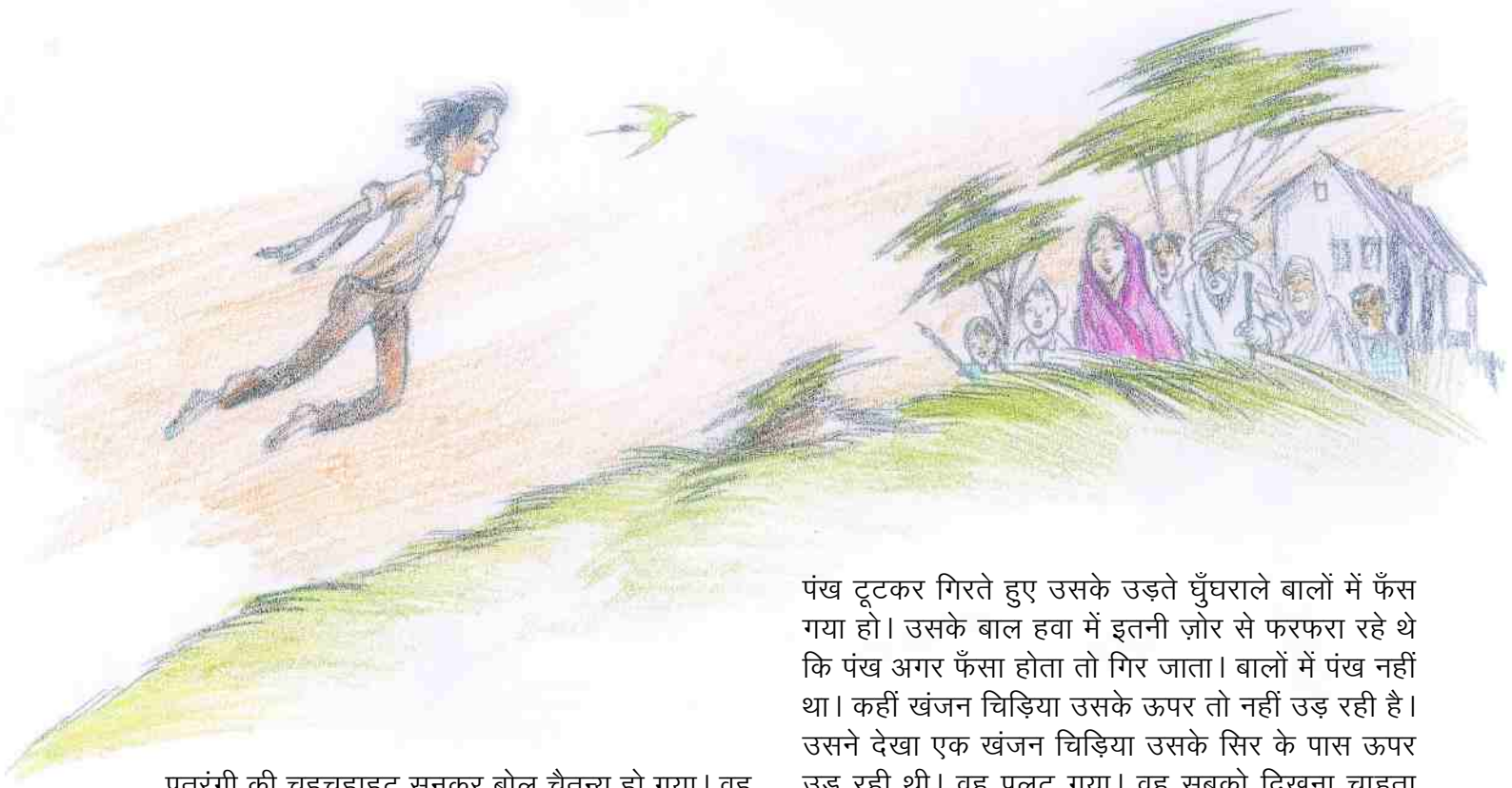

पतरंगी की चहचहाहट सुनकर बोलू चैतन्य हो गया। वह गुनगुनाकर माँ की गोद में हल्का हो हवा में थोड़ा ऊपर उठा। अत्यन्त बूढ़े ने कहा, "बोलू की माँ। बोलू को मेरी गोद में दे दो।" बोलू की माँ ने पितामह की तरह बूढ़े के हाथ की लाठी ली और नीचे रखी। बोलू को हल्के से उठाकर उनके जर्जर फैले हाथों में दे दिया। बोलू को हल्के से उठाने में चारों तरफ की जंगल की हवा ने बोलू की माँ की सहायता की थी। बूढ़े को छह साल के बोलू का भार महसूस नहीं हो रहा था। यह संसार भर के शिशुत्व का भार होगा तब भी। एक पीढ़ी का भार होगा तो भी। "पितामह बोलू को सम्हाल लेंगे न।" बोलू की माँ ने पूछा। "हाँ" पितामह ने कहा। यह "हाँ" मनुष्य सभ्यता के प्रारम्भ के सबसे बूढ़े व्यक्ति से चलकर आई हुई सुनाई दी। यह बीती पीढ़ी का कोरस था। जब बस्ती में पहुँचे तो रास्ते में एक बुज़ुर्ग महिला का घर मिला। बोलू इनको अम्मा कहता था। अम्मा घर के सामने खड़ी थी। इसी समय पितामह को बोलू भारी लगा। तो उन्होंने उसे नीचे उतार दिया। बोलू की माँ ने उन्हें लाठी पकड़ा दी थी। "अम्मा अम्मा" बोलते, हवा में डग भरता हुआ बोलू अम्मा से लिपट गया। अम्मा बोलू के घुँघराले बाल सहलाते हुए मातृत्व के सुख से भर गई।

ज़ोर की हवा चली। बोलू सबकी दृष्टि से गायब हो गया। यह क्षण भर में हुआ। वह लोगों के पास था। और सब उसे ढूँढ रहे थे। बोलू कहाँ गया? क्या वह दिख नहीं रहा है? बोलू यदि चिल्लाता कि मैं यहाँ हूँ तो हवा के कदमों से और दूर हो जाता। हो सकता है ऊपर उड़ती हुई खंजन चिड़िया पंख टूटकर गिरते हुए उसके उड़ते घुँघराले बालों में फँस गया हो। उसके बाल हवा में इतनी ज़ोर से फरफरा रहे थे कि पंख अगर फँसा होता तो गिर जाता। बालों में पंख नहीं था। कहीं खंजन चिड़िया उसके ऊपर तो नहीं उड़ रही है। उसने देखा एक खंजन चिड़िया उसके सिर के पास ऊपर उड़ रही थी। वह पलट गया। वह सबको दिखना चाहता था।

उसने सोचा कि वह दिखे। हवा धीमी हुई। कुछ भारी होकर वह खंजन चिड़िया के उड़ान के पथ के नीचे से हट गया था। और वह सबको दिखने लगा। हवा में, हवा के तेज़ झोंके बीच-बीच में आ रहे थे। तभी बोलू को लगा कि बाएँ तरफ के मोगरे की सुगन्ध वाला हवा का एक झोंका उसके बाँए कन्धे से आकर लग गया। और जंगल के घने की सुगन्ध वाला दाहिने तरफ का एक झोंका उसके दाहिने कन्धे से आकर लग गया है। दोनों झोंकों के उसके दो पंख हो गए थे और वह गोता लगाकर हवा में ऊपर जा रहा था। कूना की दृष्टि ऊपर गई। उसे लगा कि बोलू उड़ रहा है। बोलू ज़ूँ- बोलते हुए उड़ने की आवाज़ निकाल रहा था। उसे बड़ा मज़ा आ रहा था। वह ज़ूँ- भी नहीं बोलता। भारी होकर भी झोंकों के पंख से वह अच्छे से उड़ रहा था। इस बार दो खंजन चिड़िया थीं जो उड़ते हुए बोलू के सिर के पास ऊपर आ गई। तभी बोलू गायब हो गया। बोलू ने ज़ूँ ज़ूँ ज़ूँ ज़ोर से बोला। उसके झोंकों के पंख भी ज़ोर से फड़फड़ाए और वह ऊपर उड़ती खंजन चिड़िया से आगे निकल गया। बोलू दिखने लगा था।

बोलू झोंकों के पंख की सहायता से खंजन चिड़िया के साथ दिखने और गायब होने का छुपा-छुपाइल खेल रहा था। वह जब तब खंजन की उड़ान के नीचे से हट जाता तो दिखने लगता। चार खंजन चिड़िया के और आ जाने से उनकी उड़ान के नीचे से बोलू को हटने में कठिनाई होती

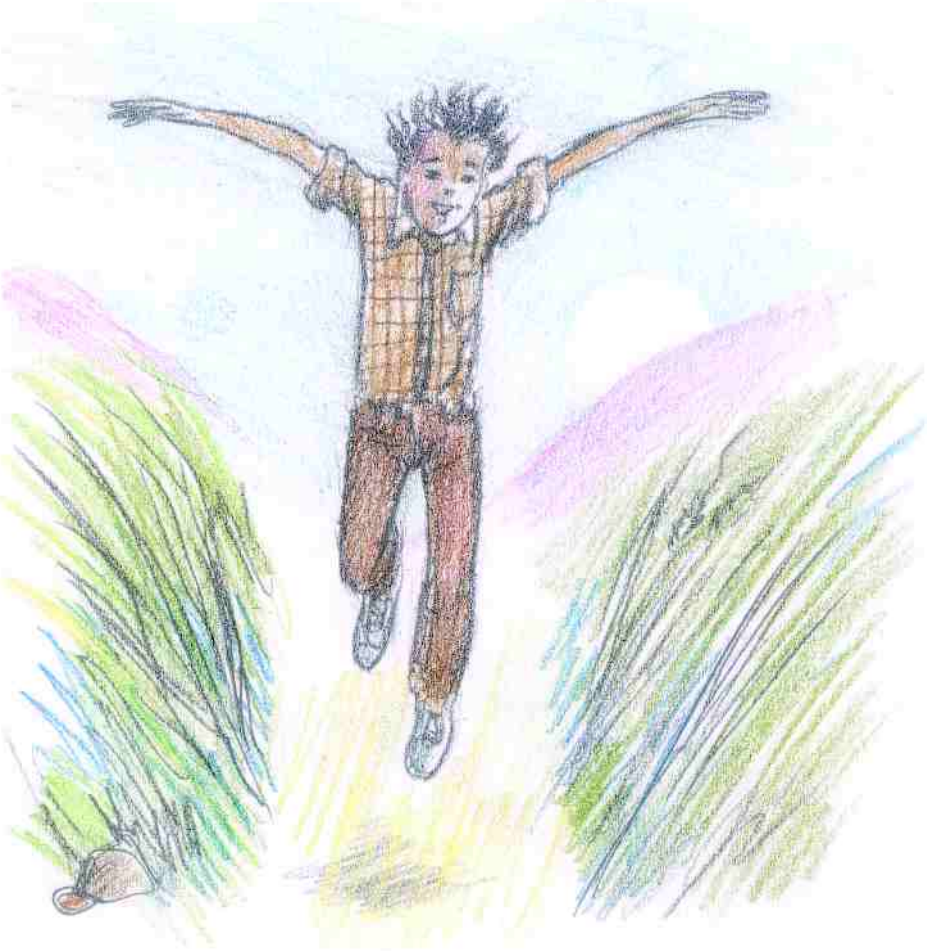

थी। उसे छुपा-छुपाइल खेलते-खेलते देर हो गई थी। लोग बोलू की बात करते हुए निश्चिन्त थे। बोलू वहाँ नहीं हैं इस बात को भूल गए थे। अकेली कूना भूली नहीं थी। बोलू को वह इधर-उधर देखती और ऊपर आकाश की तरफ भी देखती। उसे एक-दो बार लगा था कि उसने बोलू को आकाश में देखा है। छुपा-छुपाइल खेलते बोलू ने ऊपर ही ऊपर बस्ती के कई चक्कर लगाए।

हरी घास की छप्पर पर उतरने का उसका मन हुआ। हवा के झोंकों के पंख को हल्के-से फड़फड़ाकर वह हरी घास के छप्पर पर उतरने लगा। लोग अपने घरों को लौटने लगे थे। बूढ़े-बूढ़ी नहीं लौटे थे। धीरे-धीरे लाठी टेकते लौट रहे होंगे। नीचे आसपास जो लोग थे उनको लगा कि अच्छी हवा चल रही है। मोगरे और जंगल की हरियाली की सुगन्ध सबको आ रही थी। घास बहुत ऊँची थी। नीचे सिर झुका घास को हटाता हुआ बोलू उतरने की जगह देख रहा था। फूलों से भरे हुए छोटे-छोटे पौधे जगह-जगह उगे हुए थे। बोलू पौधों को बचाता हुआ उतरना चाहता था। घास की ओस की बूँदों से उसके हाथ गीले हो गए थे। उसे एक छोटी-सी चौरस जगह दिखी। वहाँ घास नहीं उगी थी। घास के बीच धँसता हुआ बोलू भीग गया था। पैंट और कमीज़ गीली हो गई थी। शाम हो रही थी। बोलू को ठण्ड लग रही थी। देर हो गई। उसे अब घर जाना चाहिए। उसे याद आया कि चन्द्रमा निकलने वाला होगा। चन्द्रमा उसके पास से निकलेगा। और वह उसे छू लेगा। हवा के झोंकों के पंखों से उड़कर घर जाएगा तो और ठण्ड लगेगी। पक्षियों को ठण्ड में उड़ने से और ठण्ड नहीं लगती होगी। ऐसा होता तो वे ठण्ड में नहीं उड़ते। पर वह पक्षी नहीं है। धीरे-से वह धरती पर उतर आया। जैसे ही वह धरती पर उतरा। उसने देखा एक बड़ा-सा चन्द्रमा हरी घास की छप्पर से निकला। यह शरद पूर्णिमा का चन्द्रमा था। बोलू अभी तक किसी को नहीं दिखा था। बोलू आसपास के दृश्यों के रंग संयोजन में इस तरह से घुलमिल जाता था कि दिखाई नहीं देता था। शरद पूर्णिमा के प्रकाश में सब इतना सुन्दर दिख रहा था कि थोड़ा-थोड़ा चन्द्रमा सबके अन्दर भी निकला। बोलू के अन्दर भी थोड़ा-सा एक चन्द्रमा निकला था।

बजरंग महराज के बाएँ हाथ में ग्राहक ने एक रुपए और पचास पैसे का सिक्का रखा। बजरंग महराज ने दाहिने हाथ से उस सिक्के को उठाकर गल्ले की पेटी में बने खाँचे में डाल दिया। गल्ले की पेटी में सिक्का गिरने की आवाज़ आती। सिक्के पर सिक्का गिरने की आवाज़ और बौने पहाड़ के गहरे तल पर सिक्कों की ढेरी पर पत्थर गिरने की आवाज़ बहुत मिलती-जुलती थी। सिक्के पर सिक्के गिरने की आवाज़ सिक्के की होती और पत्थर की सिक्के पर गिरने की आवाज़ भी सिक्के की होती। गल्ले की पेटी, तखत से सटे फर्श पर रखी होती। गल्ले की पेटी तखत की ऊँचाई के बराबर थी। परन्तु ग्राहक उत्सुकता वश रुककर गल्ले में सिक्का गिरने की आवाज़ सुनता तो उसे लगता कि बहुत गहराई से आवाज़ आ रही है। अगर ग्राहक इस तरह खड़ा रह जाता तो बजरंग महराज धीरे-से बोलते कि वही आदमी सुने "क्यों खड़ा है?" तब भी ज़ोर से शेर के दहाड़ने की आवाज़ आती। और वह आदमी घबरा जाता। वहाँ से तेज़ी से दूर चले जाना चाहता। ....जारी

देखें किस ग्रह में कितने चाँद हैं

पृथ्वी: 1	शनि: 30
मंगल: 2	युरेनस: 21
बृहस्पति: 28	नेप्च्यून: 8